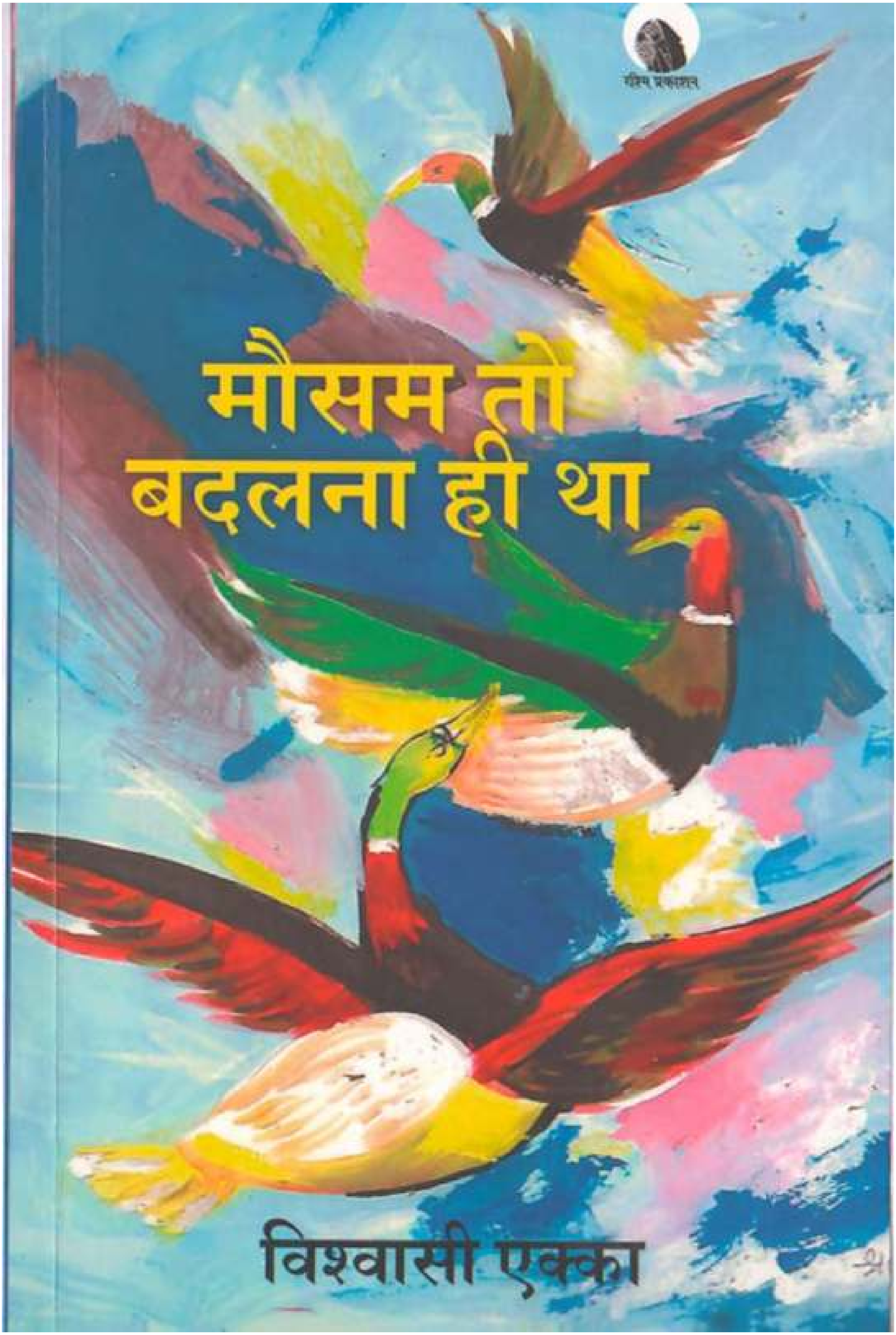
मौसम तो
बदलना ही था
विश्वासी एक्का

मौसम तो बदलना ही था

कवयित्री : विश्वासी एक्का

© : विश्वासी एक्का

पहला संस्करण : 2021

सहयोग राशि : 175 रुपये

ISBN : 978-81-952039-1-8

प्रकाशक

रश्मि प्रकाशन

महाराजापुरम्, केसरीखेड़ा रेलवे क्रॉसिंग के पास
कृष्णा नगर, लखनऊ-226023

आवरण चित्र : श्रवण कुमार शर्मा (गुदरी चौक, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़)
मोबाइल : 9993089411

मुद्रक
आर. एस. प्रिंटर्स, दिल्ली

Mausam To Badalana Hee Tha

collection of poems by Vishwasi Ekka

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

मेरी कविताएँ
समाज के सभी
शोषित-पीड़ित और उन सैकड़ों लोगों को
समर्पित
जिन्हें कोविड-19 के कारण
जीवन गंवाना पड़ा

तरतीब

काँच सा रिश्ता	9
स्त्री-एक	10
स्त्री-दो	11
स्त्री-तीन	12
स्त्री-चार	13
तुम और मैं	14
पुराने पेड़	15
पौ फट रही है	16
यह भी तो सच है	18
कितने अलग	19
आग के आविष्कारकों के प्रति	20
कहने की बात	21
अहं	22
सतपुड़ा-एक	23
सतपुड़ा-दो	25
क्या तुम्हें पता है	26
अमृता तुम्हारा नाम	27
जवाब दो	28
ये लड़कियाँ	30
मोम की ज़िंदगी	32
हम साथ हैं	34
लंबी यात्राएँ	36
समझ का दायरा	38
तुम कहते रहो	40
समय सिखाता है	41
बूंदों में बरसता प्रेम	43
सहसराम का कुनबा	45
तुम्हें पता न चला	47
मन और आँखों का रिश्ता	49
समय की कीमत	51
शेर का शिकार	53

उसे पता है	54
जंगल-जंगल	55
सदियों का सच	56
यशोत्सव	58
पगडंडी	60
बरगद	62
ज़रा सोचो	63
तुम आज़ाद हो	64
आवरण	65
बदला हुआ समय	66
मजदूर	67
नियंता	68
बेड़ियाँ	69
भेड़चाल	70
मोड़	71
क्षणभर	72
छोटी-सी बात	73
अंतर	74
जंगल बचाओ	75
आदिवासी	76
वे कौन हैं	77
यह भी एक युद्ध था	78
स्त्रियाँ नहीं भूलतीं हँसना	79
बूढ़ा आदमी और मकान	81
जब जागे तभी सवेरा	82
बाण चलाओ कंदर्प	83
डरने से पहले डरना	85
रंगा सियार	87
बजरिया	89
संकट के समय गिरफ्तारियाँ	91
पत्तों की सत्ता	92
कितना ज़रूरी है नदी हो जाना	93
पहाड़ पर जीवन	95
यरुशलम	96
यात्रा अभी शेष है	98

काँच सा रिश्ता

हम दोनों अपना जीवन अपने तरीके से नहीं जी पाये
उम्र के अर्धांश पर अपने-अपने तरीके से
जीवन जीने की जद्दोजहद में
गहरी खामोशी एक छीजते हुए रिश्ते का जाल बुनती रही
न तुम अपने तरीके जी पाये और न मैं
क्योंकि दोनों ओर एक पहरे की पदचाप
निरंतर होती रही
कभी खिलखिलाहट ने दखल देने की कोशिश की
पर वहाँ भी खामोशी ही अंततः जीतती गई
जीवन का फलसफ़ा
बस किताबों में बंद रहा
उसके पन्ने जर्जर होते रहे
जर्दी उसके पृष्ठों पर छाती रही
और हम रिश्ते को पीले पत्ते सा
पेड़ से टूटकर गिरते हुए देखते रहे।
क्या इस रिश्ते की परिणति यही होती है?
जोड़ने की कोशिश में सब टूटता जाता है
काँच के बर्तनों की तरह।
हाँ स्त्री-पुरुष के रिश्ते
शीशे की तरह ही होते हैं
जो पूरी तरह भले न टूटे
पर कोई कोना तो चटक ही जाता है।

विश्वासी एक्का

विश्वासी एक्का का जन्म 01/07/1973 को ग्राम : बटईकिला, जिला –सरगुजा, मध्यप्रदेश में हुआ। पिता प्रेमसाय तिग्गा, वन विभाग में कार्यरत थे और मां सोसन एक गृहणी थी। आपकी शिक्षा अलग–अलग स्कूलों में हुई, माता–पिता ने नौकरी में स्थानांतरण को ध्यान में रखते हुए, जिला मुख्यालय अम्बिकापुर में पढ़ाने का निर्णय लिया। प्राथमिक शिक्षा : ग्राम– गोंदा, जिला– सरगुजा में हुई, तत्पश्चात हॉस्टल में रहते हुए आपने मिडिल से लेकर उच्च शिक्षा तक की पढ़ाई पूरी की।

बचपन से ही आपका साहित्य के प्रति लगाव था, पिता कभी–कभी सोवियत रूस की एक पत्रिका लेकर आते थे, जिसमें वहाँ की खूबसूरत तस्वीरें होतीं, जो बालमन के आकर्षण का कारण होतीं, फिर उस समय छपने वाली नंदन, सरिता, चंदामामा, सुमन सौरभ जैसी पत्रिकाओं ने साहित्य के प्रति रुचि जागृत की। साहित्य में स्त्री विमर्श और आदिवासी विमर्श आपके रचना कर्म के केन्द्र में रहे हैं।

एक छोटे से गाँव से निकल कर शहर में पढ़ने और नौकरी तक अनेक संघर्षों से गुजरते हुए पारिवारिक दायित्व और नौकरी के साथ लेखन और साहित्य जगत से जुड़ना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसे आप कुशलतापूर्वक निभा रही हैं।

संपर्क : *महारानी लक्ष्मीबाई, वार्ड क्रमांक –09, न्यू कॉलोनी, पटेलपारा, अम्बिकापुर (सरगुजा), छत्तीसगढ़*

ई–मेल : vishwasi.ekka1@gmail.com

रश्मि प्रकाशन
लखनऊ

ISBN 978-81-952039-1-8

रु. 175

9 788195 203918